मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर में "लीडरशिप कॉन्क्लेव" पर माननीय अध्यक्ष का संबोधन

राजस्थान विधानसभा के माननीय अध्यक्ष, डॉ. सी.पी. जोशी जी;

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रोफेसर आई.वी.त्रिवेदी जी;

प्रिय छात्रो और संकाय के सदस्यगण;

विशिष्ट अतिथिगण; तथा देवियो और सज्जनो

वीरता, साहस, अध्यात्म और त्याग की धरती उदयपुर में प्रतिष्ठित मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों से संवाद करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है।

आज इस कार्यक्रम से मेवाड़ क्षेत्र से आये हमारे जनजातीय बंधुओं का भी मैं स्वागत करता हूँ, अभिनंदन करता हूँ।

आधुनिक राजस्थान के निर्माता स्वर्गीय मोहनलाल सुखाड़िया जी को मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि।

आज के इस लीडरशिप कॉन्क्लेव के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय – 'लीडरशिप ऑफ दि फ्यूचर' चुना गया है। यह इस विश्वविद्यालय के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे प्रांत के लिए, देश के लिए, संपूर्ण विश्व के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है।

अपनी स्थापना के 41 वर्षों में आज इस यूनिवर्सिटी ने क्षेत्र तथा राज्य में शिक्षा के एक प्रमुख केंद्र के रूप में अपनी पहचान बनाई है। हमारे विश्वविद्यालय गुणवत्तापूर्ण औपचारिक शिक्षा प्रदान करने के केंद्र तो होते ही हैं।

उनका दायित्व होता है कि वे छात्र-छात्राओं के चरित्र का निर्माण करें। ताकि एक आदर्श नागरिक तैयार हों, छात्रों की एक ऐसी पीढ़ी तैयार हो जो आगे चलकर देश की बागडोर सँभालने के लिए योग्य हो।

आप अपने इस दायित्व को गंभीरता से निभा रहे हैं, यह इस बात से साबित होता है कि आज इस विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र समाज सेवा, राजनीति, प्रोफेशनल क्षेत्रों, उद्योग, सिविल सेवा, रिसर्च, टेक्नोलॉजी, इनोवेशन में अग्रणी हैं।

यहाँ उपस्थित राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी जी इसी यूनिवर्सिटी के पूर्व छात्र हैं।

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि इस विश्वविद्यालय ने अपने परिसर में कान्स्टीट्यूशन पार्क बनाया है जो अपनी तरह की एक अनूठी पहल है।

जब लीडरशिप कांक्लेव में हम क्षमतावान नेतृत्व की बात करते हैं तो उसके प्रमाण हमें अपने देश में ही मिल जाते हैं।

भारत भूमि ने अध्यात्म, शिक्षा, विज्ञान, कला, साहित्य में विश्व को नेतृत्व दिया है। हमारा देश विश्व के महान धर्मों की जन्मभूमि रहा है।

आज से हज़ारों वर्ष पहले जब विश्व में लोकतंत्र के बारे में कोई जानता नहीं था उस समय हमारे देश में लोकतंत्र स्थापित हो चुका था। कर्नाटक में अनुभव मंटपम, बिहार में लिच्छवि गणतंत्र, चोल साम्राज्य में ग्राम सभा इत्यादि ऐसी कितनी ही लोकतांत्रिक संस्थाएँ हमारे देश में हज़ारों वर्षों पहले काम कर रही थी।

और यही कारण है कि भारत को लोकतंत्र की जननी कहा जाता है। लोकतंत्र हमारे विचारों और कार्यशैली में है। और यही कारण है कि आज पूरा विश्व लोकतंत्र के परिप्रेक्ष्य में भारत की ओर बड़ी आशा की दृष्टि से देखता है।

स्वतंत्रता संग्राम में हमारे महानायक ऐसे थे जिनकी नेतृत्व क्षमता के कारण हमने विश्व को शांतिपूर्ण संघर्ष का मार्ग दिखाया और अंततः सफलता प्राप्त की।

जब हमारा देश स्वतंत्र हुआ था, तो लोगों को संदेह था कि इतनी विविधताओं वाला देश एक कैसे रह पाएगा।

देश की स्वाधीनता की लड़ाई में विभिन्न विचारधाराओं के हमारे नेताओं ने मिलकर हिस्सा लिया और स्वतंत्रता के बाद 75 वर्षों की यात्रा में हमने अपनी इतनी भाषाई और अन्य विविधताओं के बावजूद अगर देश को एक रखा है, तो इसी लोकतंत्र ने हमें एक रखा है।

जब हमारा देश स्वतंत्र हुआ था तो उस समय लोग यह मानते थे कि हम एक नहीं रह पायेंगे। लेकिन हमारा नेतृत्व सक्षम था और कि हमने निरंतर चर्चा संवाद से अपने आप को एकजुट रखा और आगे बढ़ते रहे।

लेकिन हमारे नेतृत्व की क्षमता ऐसी थी, जिसने निरंतर चर्चा संवाद से, लोकतंत्र की शक्ति से देश की एकता बनाये रखी और हम निरंतर मज़बूत होते गये। और आज स्वतंत्रता के 75 वर्षों में हमारे लोकतंत्र की ताक़त और हमारे नेतृत्व की क्षमता है कि आज भारत विश्व में सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक सभी क्षेत्रों में नेतृत्व कर रहा है।

यह गुण हमारे में स्वाभाविक रूप से है। हम केवल भौतिक जीवन ही नहीं जीते, अध्यात्म हमारे जीवन के मूल में है। और जब भी हम पर कभी संकट आया, तो हम सामूहिकता ही हमारी शक्ति बनी है। और यही शक्ति आज हमें दुनिया के सर्वोच्च शिखर पर ले जा रही है। सामूहिकता का यह विचार हमारी प्राचीन संस्कृति और संस्कारों से आया है।

आज हमारे प्रधानमंत्री जी की सबल, सक्षम एवं समर्थ नेतृत्व क्षमता ही है कि विश्व समस्याओं के समाधान के लिए भारत की और देख रहा है। यह दिखाता है कि एक समर्थ और मज़बूत नेतृत्व किस प्रकार देश को आगे बढ़ा सकता है।

एक समय था जब हम आवश्यक वस्तुओं के लिए भी अन्य देशों पर निर्भर थे और आज वह समय है जब हम ना सिर्फ़ आत्मनिर्भर हैं बल्कि विश्व के लिए उत्पादन कर रहे हैं।

हम ग्लोबल सप्लाई चेन का एक अभिन्न अंग हैं। यह हमारे लोकतंत्र की शक्ति है और हमारे नेतृत्व की ताक़त है।

एक समय था, जब हमारी जनसंख्या को एक समस्या मानते थे। पर हमारा नेतृत्व था जिसने इस जनसंख्या को एक एसेट बनाया है और आज हम डेमोग्राफिक डिविडेंड की बात कर रहे हैं।

आज हमारे युवा विश्व में सभी प्रोफेशन में नेतृत्व कर रहे हैं। मेडिकल, इंजीनियरिंग, टेक्नोलॉजी, इनोवेशन सभी क्षेत्रों में हमारे युवाओं का सामर्थ्य सर्वश्रेष्ठ साबित हुआ है। यह हमारे दूरदर्शी नेतृत्व के कारण ही संभव हुआ है।

आज भारतीय कंपनियाँ ही नहीं बल्कि विश्व की लीडिंग कम्पनीज़ को भारतीय युवा चला रहे हैं। हमारे युवाओं की बौद्धिक क्षमता, उनकी नेतृत्व क्षमता को पूरे विश्व ने माना है।

मैं जब भी विदेशों में जाता हूँ तो देखता हूँ कि वहाँ जितने भी डॉक्टर हैं, इंजीनियर हैं, पैरा-मेडिकल स्टाफ हैं, सर्विस सेक्टर में काम करने वाले लोग हैं, अन्य प्रोफेशनल हैं, उनमें भारतीयों की संख्या सबसे अधिक हैं।

भारत के युवा ही डाटा साइंस, मशीन लर्निंग, रोबोटिक्स, फिनटेक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी नई प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

आप इस कांक्लेव में ज्ञान को साझा करने, नेटवर्किंग और साझेदारी के माध्यम से हमारे युवा साथियों के अंदर की लीडरशिप क्वालिटी को सामने लाने के संदर्भ में वार्ता करेंगे। आप संवाद करेंगे कि हमारे नेतृत्व में क्या गुण हों, क्या विशेषताएँ होनी चाहिए।

नेतृत्व का सबसे महत्वपूर्ण कार्य होता है, अपने लोगों को सही मार्ग दिखाना, सही मार्गदर्शन करना। इसके लिए उन्हें मौजूदा रुझानों के प्रति सजग होना चाहिए तथा उन्हें अपनाना भी चाहिए, नवोन्मेष को बढ़ावा देना चाहिए।

साथ ही सामूहिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोगों को प्रेरित भी करना चाहिए।

आप इस लीडरशिप कॉन्क्लेव के दौरान भविष्य में प्रभावी नेतृत्व के लिए आवश्यक कौशल और गुणों की पहचान करेंगे।

इस कॉन्क्लेव के दौरान रणनीतिपरक सोच, दक्षता और अनुकूलन, दूसरों के प्रति संवेदना का भाव, तकनीकी ज्ञान, नैतिकतापूर्ण निर्णय लेने की क्षमता और सहयोग की भावना, जैसे विषयों पर संवाद करेंगे।

वास्तव में नेतृत्व वही दे सकता है, जो इनोवेशन को बढ़ावा दे सके, विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोगों को प्रेरित कर सके और बदलते परिदृश्य में सकारात्मक बदलाव ला सके।

आप सभी युवा हैं और भारत के भविष्य की ज़िम्मेदारी आपके ऊपर है। बदलते परिप्रेक्ष्य में, जब हमारा देश एक वैश्विक शक्ति बन रहा है, ऐसे में हमारे उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे नेतृत्व की भूमिका महत्वपूर्ण होगी।

आज हमें ऐसे युवाओं की आवश्यकता है, जो देश की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता और अपनी युवा आबादी का लाभ उठाने, प्रौद्योगिकी को अपनाकर नई-नई पहल करने और सामाजिक एकता को बढ़ावा देते तथा पर्यावरण का संरक्षण करते हुए शासन संबंधी चुनौतियों का इनोवेटिव समाधान दे।

आज हम तकनीकी रूप से तेजी से परिवर्तित हो रहे एक नए युग में प्रवेश कर रहे हैं, जहाँ जनता की सामाजिक अपेक्षाएं बढ़ रही हैं।

और इसीलिये नेतृत्व की संकल्पना में भी परिवर्तन आया है। एक समय था जब नेतृत्व से वर्तमान चुनौतियों का सामना करने की आकांक्षा होती थी।

लेकिन बदलते परिप्रेक्ष्य में भविष्य के नेताओं को दूरदर्शी सोच, सक्रियता, भावनात्मक दृष्टिकोण, तकनीकी दक्षता, नैतिक निर्णय लेने की क्षमता और साथ मिलकर काम करने की क्षमता आवश्यक होगी। हमें भविष्य की चुनौतियों का पूर्व आकलन कर उनके समाधान के लिए काम करना होगा।

'लीडरशिप कॉन्क्लेव' के माध्यम से हम ऐसे नेताओं को तैयार कर सकें, जो एक समृद्ध, समावेशी और मजबूत भारत के विकास में अपना योगदान देते हुए भविष्य की चुनौतियों का समाधान कर सकें, ऐसी मेरी शुभकामना है।

प्रिय विद्यार्थियो, समाज को आपसे बहुत उम्मीदें हैं। आपको समाज का पथप्रदर्शक बन परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करना होगा। इसके लिए आपको राष्ट्र निर्माण के कार्य में आगे आकर अपना योगदान देना चाहिए।

जब आप नेतृत्व की भूमिका में आते हैं, तो यह आपकी निजी उपलब्धि हो सकती है, परन्तु यह उपलब्धि अपने साथ बड़ी जिम्मेदारियां भी लाती है। आपको इन ज़िम्मेदारियों को पूरा करना होगा।

हम आधुनिकता के रास्ते पर आगे बढ़ें, लेकिन अपनी विरासत को साथ लेकर। नवाचार और निरंतर सीखने की संस्कृति के साथ हम आगे बढ़ें। विकासवादी सोच के साथ सबके सहयोग और सबके प्रयास के साथ आगे तरक्की करें।

इन्हीं शब्दों के साथ आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। मेरी कामना है कि आप जीवन में सफलता प्राप्त करें और अपने देश प्रदेश और इस महान शिक्षण संस्थान का नाम ऊँचा करें।

आप सबका बहुत बहुत धन्यवाद।